



UPBB010065942021

न्यायालय: विशेष न्यायाधीश (एम०पी०/एम०एल०ए०)/ अपर जिला एवं सत्र  
न्यायाधीश, न्यायालय सं.04, बाराबंकी।

सत्र परीक्षण वाद सं० 1990/2021

सरकार

बनाम

अमित कुमार आदि।

अपराध सं. 16 /2015  
धारा 147, 148, 149, 302, 364,  
201, 216 भा०दं०सं०,  
थाना बदोसराय, जिला बाराबंकी।

निस्तारण प्रार्थनापत्र ब 48

आदेश पत्र

01-09-2022

विशेष सत्र परीक्षण प्रस्तुत हुआ।

पुकार पर डा० विजय कुमार जिला कारागार से उपस्थित। अभियुक्तगण मृदुला आनन्द, रिकू उर्फ नंदकिशोर, अमित कुमार, राम सिंह व तूफानीराम का हाजिरी माफी प्रार्थनापत्र प्रस्तुत, आज हेतु स्वीकृत। अभियुक्तगण राजेन्द्र व संगम व्यक्तिगत रूप से उपस्थित हैं।

पत्रावली आज प्रार्थनापत्र ब 48 पर निस्तारण हेतु नियत है।

प्रार्थनापत्र ब-48 अन्तर्गत धारा 227 दं०प्र०सं० अभियुक्ता मृदुला आनन्द की ओर से इस आशय का दिया गया है कि प्रथम सूचना रिपोर्ट में घटना का उद्देश्य नौकरी लगवाने के लिये लेन देन किया जाना बताया गया है जबकि आरोप पत्र में इस बात की कोई पुष्टि नहीं हुई है। प्रथम सूचना रिपोर्ट मृतका की लाश मिल जाने के बाद करायी गयी है उसमें हत्या सम्बंधी बात वादी मुकदमा ने लिखायी है कि जैसे वो घटना का चश्मदीदी गवाह हो। विवेचना शासन के आदेश से अपराध अनुसंधान विभाग से करायी गयी है उसके खिलाफ कोई भी साक्ष्य व सबूत नहीं मिल पा रहा है। उसके उपरान्त माननीय न्यायालय के आदेश से की गयी विवेचना में पुलिस अधीक्षक बाराबंकी के 14-11-2017 के आदेश के बाद विवेचनाधिकारी साक्ष्य एकत्र करने के बजाय साक्ष्य का सृजन करने लगे जिसके तहत उन्होंने दिनांक 14-12-2017 को गवाह हर्षित राज श्रीवास्तव, अर्पित राज श्रीवास्तव का अतिरिक्त बयान दर्ज कर साक्ष्य की रचना शुरू कर दी। अर्पित राज ने बयान में कहा कि वह व्यक्ति को पहचानता नहीं था बल्कि गवाह शिवम श्रीवास्तव के बताने पर उक्त तथ्य की जानकारी हुई, जिस कारण उसके विरुद्ध कोई सबूत नहीं है।

शिवम को थाने से शिखर श्रीवास्तव के मोबाइल से बताया था कि शिखर का एकसीडेन्ट हो गया है, बात कराने पर कहा कि वह खत्म हो गये हैं। इस तरह से एकसीडेन्ट की घटना को हत्या के बाद वादी मुकदमा ने गलत तहरीर देकर तब्दील कियो है। आरोप पत्र के गवाह सुभाष के विवेचनाधिकारी को दिनांक 20-12-2017 को दिये गये बयान में स्पष्ट रूप से कहा कि मृतक घटना के पूर्व वाले दिन निशातगंज सरकारी आवास पर नहीं आया था जबकि गवाहों द्वारा आवास पर मृतक के जाने की बात कही गयी है। आरोप पत्र में जिस मोबाइल नम्बर को प्रार्थिनी का होना कहा गया है वह उसका नहीं है और न ही उससे उसका कोई सम्बंध है। उसके विरुद्ध आरोप पत्र में कोई सबूत नहीं है, अतः उसे आरोप मुक्त किया जाये।

विद्वान सहायक जिला शासकीय अधिवक्ता, फौजदारी द्वारा प्रार्थनापत्र का घोर विरोध किया गया और कहा गया कि अभियुक्ता पर बतौर DIOS एवं सरकारी साइस टीचर के रूप में अपने पति मुख्य अभियुक्त डा० विजय विधायक के रूप में वादी के पुत्र के साढ़े तीन लाख रुपये टीचर की नौकरी लगवाने के बहाने लेकर हड़प लेने व पैसा वापस मांगने पर, पैसा लेने के बहाने उसको बुला कर सहअभियुक्तों के साथ मिलकर उसकी साजिश हत्या करा कर उसकी लाश गायब करने का गम्भीर आरोप है। अभियुक्ता द्वारा उपरोक्त प्रार्थनापत्र येन केन प्रकारेण पत्रावली में आरोप विरचन न होने के उद्देश्य से मामले में विलम्ब कारित होने हेतु एवं अवांछित लाभ प्राप्त करने के उद्देश्य से दिया गया है। गवाह शिवम ने 19-01-2015 को मृदुला, विजय, संगम, अमित को सफारी गाड़ी में एक साथ देखने का साक्ष्य दिया है, तभी से वह गायब था और अगले दिन मृतक शिखर की लाश मिली। इस तरह प्रथम दृष्टया अभियुक्ता की संलिप्तता घटना में दर्शित होती है। उपरोक्त आधारों पर प्रार्थना की गयी है कि प्रार्थनापत्र निरस्त किया जाये।

उभयपक्ष के विद्वान अधिवक्ताओं की बहस पूर्व तिथि पर सुनी जा चुकी है। पत्रावली का अवलोकन किया गया।

पत्रावली के परिशीलन से स्पष्ट है कि वादी श्री दिनेश चन्द्र द्वारा इस आशय की प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज करायी गयी थी कि उनका लड़का शिखर श्रीवास्तव उर्फ राजा दिनांक 19-01-2015 को अपने आफिस गया था और वहीं से 12:30 बजे लखनऊ चला गया। डा० विजय कुमार विधायक (बासगांव) व उनकी पत्नी मृदुला आनन्द (जिला विद्यालय निरीक्षक) ने नौकरी की बावत रु.3,50,000/- लिये थे, जिसको मांगने के उद्देश्य से वादी का लड़का उनके घर कई बार गया, परन्तु ये लोग टालते रहे, काफी दिन बाद उसके लड़के ने बताया कि डा० विजय कुमार व उनकी पत्नी ने उससे रु.3,50,000/- रुपये लिये हैं तब वह अपनी पत्नी के साथ डा० विजय कुमार व मृदुला आनन्द से लखनऊ में मिला तो उन्होंने कहा कि परेशान न हो, लड़के का काम करा देंगे। दिनांक 19-01-2015 को समय करीब 05:45 बजे विधायक ने अपने

आदमियों द्वारा शिखर को घर बुलवाया कि आकर पैसा वापस ले लो, वादी ने अपने छोटे बेटे शिवम से फोन पर बात की तो पता चला कि कुछ लोगों के साथ वह विधायक के यहां गया हुआ है, तो वादी फोन करता रहा और फोन भी मिलवाया, परन्तु फोन स्विच आफ बताता रहा। वादी का छोटा लड़का शिवम उनके सरकारी आवास निशातगंज लखनऊ गया जहां उसके नौकर ने बताया कि विधायक व उनकी पत्नी मृदुला आनन्द तथा 4-5 अन्य लोग शिखर श्रीवास्तव को जबरदस्ती गाड़ी से ले गये हैं। गनर एवं घर के नौकरों से पूछताछ की गयी तो जवाब मिला कि विधायक जी से सबेरे साढ़े आठ बजे मुलाकात होगी। दिनांक 20-01-2015 को सुबह 08:20 बजे, शिखर के मोबाइल से वादी के छोटे बेटे के नम्बर पर पुलिस से सूचना आयी थी कि उसके भाई की लाश सड़क किनारे बदोसराय रामनगर मार्ग पर ग्राम बरदरी मरकामऊ में छत-विछत पड़ी है, जिस पर सभी लोगों ने पहुंचकर लाश की शिनाख्त की, तब वादी द्वारा थाने पर डा० विजय कुमार व उनकी पत्नी मृदुला आनन्द तथा 5-6 अन्य व्यक्तियों पर शिखर की धारदार हथियार व लाठी डण्डा से मारकर हत्या कारित करने का एवं लाश छिपाने का आरोप लगाते हुए थाना बदोसराय में अपराध सं.16/2015, अन्तर्गत धारा 147, 148, 364, 302, 201 IPC में मुकदमा पंजीकृत किया गया। दौरान विवेचना विवेचक द्वारा वादी मुकदमा दिनेश चन्द्र श्रीवास्तव, शिवम श्रीवास्तव, अर्पितराज, कन्हैयालाल, विधायक के सेवक सुभाष एवं सद्दाम के बयान के अलावा अन्य कई साक्षियों के बयान अंकित किये गये। वादी दिनेश चन्द्र श्रीवास्तव ने अपने बयान में विवेचक को बताया कि उसके लड़के शिखर ने बताया था कि विधायक डा० विजय व मृदुला आनन्द ने उससे साढ़े तीन लाख रूपये नौकरी लगवाने के लिये लिया था और ये लोग उसकी नौकरी नहीं लगवा पाये और मेरे बेटे के पैसे मांगने पर बार बार टाल जाते थे, यह जानकारी होने पर वह अपनी पत्नी के साथ डा० विजय कुमार व मृदुला आनन्द से लखनऊ में जाकर निशातगंज में उनके आवास पर मिला तो भी उन्होंने कहा कि पैसा वापस कर देंगे। दिनांक 19-01-2015 को जानकारी हुई की उनका लड़का आफिस से ही लखनऊ चला गया। उसके छोटे बेटे शिवम ने बताया कि शिखर ने पैसा लेने के लिये विधायक जी के यहां जाने की बात उससे बतायी थी और यह भी बताया था कि उसका फोन स्विच आफ आ रहा है। विधायक जी के सरकारी आवास निशातगंज जाने पर वहां नौकर ने बताया कि शिखर श्रीवास्तव को डा० विजय कुमार विधायक उनकी पत्नी मृदुला आनन्द तथा 4-5 अन्य लोगों ने जबरदस्ती गाड़ी में बैठा लिया और कहीं ले गये, जिसके आधार पर तहरीर थाना महानगर में दी गयी थी और उपनिरीक्षक मनोज कुमार विधायक जी के आवास पर गये परन्तु विधायक व उनकी पत्नी नहीं मिलीं तथा विधायक जी व उनकी पत्नी का मोबाइल मिलाया तो नहीं मिला, नौकरों से पूछताछ पर आश्वासन मिला कि सुबह 08:30 बजे विधायक जी से मुलाकात हो जायेगी, इस पर छोटा बेटा व उसके साथी वापस आ गये। आज सुबह साढ़े आठ बजे उसके बेटे शिखर के मोबाइल से शिवम के नम्बर पर पुलिस

द्वारा सूचना दी गयी कि उसका भाई की लाश रामनगर बदोसराय मार्ग पर ग्राम बरदरी भरमामऊ में पड़ी है। उसके लड़के तथा परिवार के अन्य लोगों ने जाकर लाश को देखा तथा पहचाना। शिखर के शरीर पर काफी चोटें थी तथा उसका कपड़ा खून से सना हुआ था। अपने मजीद बयान में वादी ने बताया है कि उनका लड़का विधायक डा० विजय की पत्नी जो DIOS हैं, के द्वारा सरकारी साइंस टीचर की नौकरी लगवाने के आश्वासन में डा० विजय कुमार के चुनाव में उनके साथ रहा था तथा मृदुला आनन्द से भी उनके सम्बंध हो गये थे, जिस कारण उसने साढ़े तीन लाख रुपये दिये थे, उक्त पैसा हर्षित राज श्रीवास्तव के सामने दिया गया था।

शिवम ने पुलिस को दिये गये अपने बयान में बताया कि दिनांक 19-01-2015 को वह लखनऊ में था, दिन में ढाई बजे शिखर ने उसे बताया कि लखनऊ आ रहा है, विधायक डा० विजय एवं मृदुला आनन्द ने साढ़े तीन लाख रुपये देने के लिये निशातगंज सरकारी आवास लखनऊ पर बुलाया है, जो पहले नौकरी दिलाने के लिये लिये थो, शाम को खाना साथ खायेंगे। साढ़े पांच बजे शाम के आस पास हनीमैन चौराहे पर लखनऊ में मिलना। वह पांच बजे चचेरे भाई अर्पित श्रीवास्तव व अमन श्रीवास्तव के साथ हनीमैन चौराहे पर आया, करीब साढ़े पांच बजे हनीमैन चौराहे पर सफारी गाड़ी से शिखर आया, उसने रूकवाने का इशारा किया, गाड़ी के अन्दर की लाइट जल रही थी, लेकिन गाड़ नहीं रूकी। उन सब ने देखा कि गाड़ी में उसका भाई शिखर श्रीवास्तव, विधायक विजय कुमार, उनकी पत्नी मृदुला आनन्द, ड्राइवर अमित कुमार, विधायक के साथ रहने वाले रिकू और संगम तथा तीन आदमी अन्य थे। शिखर का फोन मिलाने पर फोन स्विचआफ मिला। शिखर के दोस्त कन्हैया को फोन लगाने पर उसने बताया कि करीब साढ़े चार बजे पालीटेक्निक चौराहे पर मिला था और कुछ सामान दिया था तथा यह भी बताया था कि विधायक विजय कुमार व उनकी पत्नी मृदुला आनन्द के पास जा रहा हूं, जो नौकरी दिलाने के लिये पैसा लिये थे, देने के लिये बुलाया है, लेकिन वापिस नहीं आया। इसके पश्चात् वह, अर्पित व अमन विधायक विजय कुमार के सरकारी आवास निशातगंज पर आये परन्तु विधायक व उनकी पत्नी नहीं मिले तथा नौकर सुभाष व सद्दाम मिले, उन्होंने बताया कि विधायक जी व उनकी पत्नी, शिखर, अमित, रिकू, संगम व तीन अन्य लोगों के साथ सफारी गाड़ी से कहीं गये हैं। विधायक के गनर तूफानीराम ने मोबाइल नम्बर 9919345274 पर बताया कि बाहर हैं, सुबह आवास पर आ जाना। दिनांक 20-01-2015 को बदोसराय के पुलिस द्वारा सूचना मिली कि शिखर की लाश रामनगर बदोसराय रोड पर पड़ी है जिस पर वह उसके पिता तथा परिवार के सभी लोग वहां जाकर लाश को देखकर उसकी शिनाख्त किये और उसके पिता ने 20-01-2015 को ही थाना बदोसराय पर प्रार्थनापत्र देकर मुकदमा पंजीकृत कराया। विधायक विजय कुमार व उनकी पत्नी मृदुला, अमित कुमार, रिकू व संगम और तीन आदमी अन्य ने मिल कर उसके भाई की हत्या की है। दिनांक 25-11-2017 को अपने मजीद बयान में शिवम

श्रीवास्तव ने बताया कि जब वह अर्पितराज व नमन के साथ निशातगंज विधायक के आवास पर गया था तो उनके नौकर सुभाष व सद्दाम ने बताया था कि विधायक जी का ड्राइवर अमित, रिकू, संगमलाल व उसका भाई शिखर श्रीवास्तव व तीन और लोग विधायक जी व उनकी पत्नी के साथ बाहर निकले हैं, इसके बाद वह फिर लखनऊ गया था और सुभाष व सद्दाम से मिला था तो उन्होंने बताया था कि रामसिंह पुत्र भूलन, राजेन्द्र कुमार पुत्र विश्वनाथ की तूफानीराम गनर से दोस्ती थी। रामसिंह व तूफानीराम दोनो ने विधायक व उनकी पत्नी को राजेन्द्र कुमार के फूलबाग वाले मकान जो थाना गुडम्बा में है, में छोड़कर दिनांक 21-01-2015 को तूफानीराम वापस चला आया था। गवाह अर्पितराज ने अपने धारा 161 दं०प्र०सं० के बयान में कहा है कि शिखर श्रीवास्तव ने दिनांक 19-01-2015 को फोन करके अपने भाई शिवम को बताया था कि वह लखनऊ आ रहा है, विधायक डा० विजय एवं मृदुला आनन्द ने पैसा वापस लेने के लिये बुलाया है। आज रात आपके पास रूकूंगा और खाना खाउंगा। शाम साढ़े पांच बजे हनीमैन चौराहे पर मिलना। शाम पांच बजे वह शिवम तथा नमन हनीमैन चौराहा पर पहुंच गये। शाम साढ़े पांच बजे विधायक की गाड़ी निकली जिसमें विधायक व उनकी पत्नी, शिखर श्रीवास्तव, ड्राइवर अमित, संगमलाल, रिकू व तीन अन्य व्यक्ति बैठे थे। गाड़ी रोकने का शिवम ने इशारा किया तो गाड़ी स्लो हुई और आगे बढ़ गयी। शिखर श्रीवास्तव तथा विधायक व उनकी पत्नी का फोन मिलाने पर फोन बन्द था। इसके बाद तीनों लोग मृदुला आनन्द के सरकारी आवास निशातगंज गये, वहां पर नौकरों ने बताया कि विधायक जी, उनकी पत्नी, ड्राइवर अमित, संगमलाल, रिकू तथा शिखर कहीं निकले हैं। विधायक के गनर तूफानीराम से मोबाइल पर बात करने पर उसने बताया कि वह लोग बाहर हैं। इसके बाद थाना महानगर में शिखर के गायब होने की सूचना देने पर एस०आई० मनोज कुमार के द्वारा मृदुला आनन्द के सरकारी आवास पर जाकर गनर तूफानीराम से बात किया था तो उसने बताया था कि विधायक जी बाहर हैं, सुबह बात हो सकेगी। गवाह ने आगे अपने बयान में पुलिस को बताया है कि शिखर व मृदुला आनन्द का व्यवहार अच्छा हो गया था और शिखर ने साढ़े तीन लाख रुपये नौकरी दिलाने के लिये मृदुला आनन्द को दिये थे। दिनांक 19-01-2015 को शिखर पैसा वापस लेने लखनऊ गया था। उसके सामने मौके से शिखर का एक जोड़ी जूता, टूटा बटन, बेल्ट का बक्कल व सफारी गाड़ी के मडगार्ड का टुकड़ा मिला था।

इस तरह स्पष्ट है कि मृत्यु से पहले शिखर को सफारी गाड़ी में प्रार्थिनी/अभियुक्ता मृदुला आनन्द एवं डा० विजय कुमार, रिकू, अमित व संगम के साथ देखा गया है और अगले दिन सुबह उसकी लाश रामनगर बंदोसराय मार्ग पर मिली। लाश के कपड़े रक्त रंजित थे तथा पंचायतनामा के अनुसार मृतक के सिर पर तथा हाथ पैर पर चोट के निशान थे। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के अनुसार मृतक के शरीर पर कई जगह चोट के निशान थे, जिनमें अब्रेजन, कन्ट्यूजन, लेसरेटड उंड की चोटें पायी गयीं तथा रिब्स की

हड्डियां भी टूटी पायी गयीं। अभियोजन की ओर से अन्य ऐसा कोई कथन नहीं आया है कि मृतक शिखर को 19-01-2015 की शाम 5:30 बजे के बाद किसी अन्य के साथ देखा गया हो। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के अनुसार मृतक की मृत्यु, पोस्टमार्टम के लगभग आधा से एक दिन पहले हुई थी। दौरान विवेचना पुलिस द्वारा सफारी गाड़ी के टूटे हुए मडगार्ड के टुकड़े बरामद किये गये थे और यदि उपरोक्त अभियोजन कथानक साक्ष्यों के आधार पर साबित हो जाता है तो अभियुक्तगण को दोषसिद्ध किया जा सकता है। अभियोजन कथानक ऐसा नहीं है कि उसके साबित हो जाने पर भी अभियुक्तगण की दोषसिद्धि न की जा सके। इसप्रकार अभियुक्तगण द्वारा अपराध किये जाने का गम्भीर सन्देह उत्पन्न होता है। गम्भीर सन्देह एवं मात्र सन्देह में अन्तर है। गम्भीर सन्देह तब होता है जब तथ्य इस ओर इशारा करते हो कि इस बात की अत्यधिक सम्भावना है कि अभियुक्तगण द्वारा अपराध कारित किया गया हो। सन्देह तब होता है जब मात्र यह कहा जाये कि हो सकता है कि अभियुक्तगण ने अपराध कारित किया हो। प्रस्तुत मामले में परिस्थितियां एवं तथ्य इस ओर इशारा करते हैं कि अत्यधिक सम्भावना है कि प्रार्थिनी/अभियुक्ता एवं अन्य अभियुक्तगण द्वारा अपराध किया गया हो। विधि व्यवस्था दिलावर बालू बनाम स्टेट आफ महाराष्ट्र, माननीय उच्चतम न्यायालय क्रिमिनल अपील नं.8/2002 निर्णीत दिनांक 08-01-2002 में माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा यह सिद्धान्त प्रतिपादित किया गया है कि धारा 227 दं०प्र०सं० के अधीन शक्तियों का प्रयोग करते हुए आरोप विरचन के बिन्दु पर न्यायालय को तथ्यों को छानने एवं तौलने की सीमित शक्ति इस तथ्य के निर्धारण के लिये प्राप्त है कि अभियुक्त के विरुद्ध प्रथम दृष्टया कोई मामला बनता है या नहीं। जहां न्यायालय के समक्ष पत्रावली पर प्रस्तुत सामग्री से अभियुक्त द्वारा अपराध किये जाने का गम्भीर सन्देह विद्यमान होता है, जिसका स्पष्टीकरण नहीं दिया गया है, वहां न्यायालय अभियुक्त के विरुद्ध आरोप विरचित कर कार्यवाही आगे बढ़ाने में पूर्णतया विधिसम्मत है।

उपरोक्त विधि व्यवस्थाओं के आलोक में सम्मानपूर्वक मेरा मत है कि प्रस्तुत मामले के तथ्यों को देखते हुए कि मृतक को अन्तिम बार सफारी गाड़ी में प्रार्थिनी/अभियुक्ता को उसके पति डा. विजय, रिकू, अमित, संगम के साथ देखा गया था और उपरोक्त तथ्य का खण्डन पत्रावली पर उपलब्ध सामग्री से नहीं होता और इस कारण अभियुक्ता मृदुला आनन्द के विरुद्ध अन्य अभियुक्तगण के साथ आरोप विरचित करने हेतु पर्याप्त साक्ष्य उपलब्ध हैं। इस कारण उपरोक्त विधि व्यवस्था का लाभ अभियुक्ता को नहीं मिलेगा। माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा एक अन्य विधि व्यवस्था **State of Tamilnadu representated by Inspector of police Vigilance and Anti corruption Vs N. Suresh Rajan 2014 (11) SCC 709** में यह विधिक सिद्धान्त प्रतिपादित किया गया है कि "At the stage of consideration of an application for

discharge, Court has to proceed with an assumption that the material brought on record by prosecution are true and evaluate the said material and documents with a view to find out wheather the facts emerging there from taken at their face value disclose the existence of all the ingredients constituting the offence." माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा एक अन्य विधि व्यवस्था पलविन्दर बनाम बलविन्दर सिंह 2009(3) SCC 850 में यह विधिक सिद्धान्त प्रतिपादित किया गया है कि उन्मोचन प्रार्थनापत्र के निस्तारण के समय सेशन जज का क्षेत्राधिकार सीमित हाता है। आरोप गम्भीर सन्देह के आधार पर भी विरचित किया जा सकता है। आरोप के स्तर पर साक्ष्य का क्रमबंधन और विश्लेषण करने की न्यायालय को शक्ति प्राप्त नहीं है।

माननीय उच्चतम न्यायालय की उपरोक्त विधि व्यवस्थाओं के परिशीलन से स्पष्ट है कि अभियोजन द्वारा ऐसी सामग्री प्रस्तुत किये जाने पर जिससे अभियुक्ता द्वारा अपराध किये जाने का गम्भीर सन्देह उत्पन्न होता है, अभियुक्ता के विरुद्ध आरोप विरचित किया जा सकता है। प्रस्तुत मामले में अभियोजन के मौखिक साक्षियों ने पुलिस को दिये अपने बयान में अभियुक्ता मृदुला आनन्द को मृतक शिखर श्रीवास्तव के साथ उसकी मृत्यु से पूर्व गाड़ी में देखे जाने का साक्ष्य दिया है और अगले ही दिन मृतक शिखर श्रीवास्तव की लाश बरामद होती है और पोस्टमार्टम रिपोर्ट के अनुसार मृतक की मृत्यु पोस्टमार्टम किये जाने के आधा से एक दिन पूर्व होना अंकित है। इस तरह अभियुक्ता द्वारा मृतक शिखर श्रीवास्तव की हत्या में शामिल होने अथवा उसकी हत्या किये जाने का गम्भीर सन्देह विद्यमान है। अभियुक्ता मृदुला आनन्द के विरुद्ध आरोप विरचन हेतु पर्याप्त सामग्री पत्रावली पर उपलब्ध है। अतः अभियुक्ता मृदुला आनन्द का उन्मोचन प्रार्थनापत्र ब 48 निरस्त किये जाने योग्य है।

### आदेश

अभियुक्ता मृदुला आनन्द का उन्मोचन प्रार्थनापत्र ब 48 निरस्त किया जाता है। पत्रावली वास्ते आरोप विरचन दिनांक 05-09-2022 को पेश हो। नियत तिथि 05-09-2022 को सभी अभियुक्तगण व्यक्तिगत रूप से उपस्थित रहें।  
दिनांक 01-09-2022

( कमल कान्त श्रीवास्तव )

J.O. Code:UP01559

विशेष न्यायाधीश (एम०पी०/एम०एल०ए०)/  
अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश,  
न्यायालय सं.04, बाराबंकी।